कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत एकमात्र कृषि साप्ताहिक

डाक प्रेषण का दिन – मंगलवार, बुधवार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन – सोमवार 1 दिसम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 13 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 16 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

रबी विशेषांक

इस अंक में देखें

- गेहूं की सफल खेती के लिए अपनाएं इन सूत्रों को
- फसलों में राइजोबियम की उपयोगिता
- रबी रागी की उन्नत तकनीक
- सब्जियों में पोषक तत्वों का महत्व, कमी के लक्षण

कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के लिए 28 लाख पाठकों का एक मात्र साप्ताहिक अखबार

समितियों में एग्रीस्टेक पोर्टल पर खसरे अपडेट करा सकते हैं किसान

रायपुर। धान खरीदी के संबंध में किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रावधान शासन द्वारा एग्री स्टेक पोर्टल में किया गया है। जिसके तहत एग्रीस्टेक पोर्टल में पंजीकृत एक से अधिक खसरे वाले ऐसे किसान जिनके सभी खसरों में से कुछ खसरे पोर्टल में उनके एग्रीस्टेक आईडी में प्रदर्शित नहीं हो रहे हैं या लिंक होना शेष रह गए हैं, ऐसे खसरों की पहचान कर समितिवार सूची बनाई गई है, तथा उसे समितियों के बाहर चस्पा किया गया है। किसानों से आग्रह किया है कि वे समितियों में जाकर अपने छूटे हुए खसरों का मिलान कर उसे पोर्टल में लिंक करवा सकते हैं। इसके लिए किसान समितियों के किसान सहायता केंद्र में जाकर वहां के ऑपरेटर अथवा ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं।

खाद्य अधिकारी कबीरधाम ने बताया कि खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में धान खरीदी हेतु भारत सरकार, कृषि मंत्रालय के एग्रीस्टेक पोर्टल में किसान पंजीयन अनिवार्य किया गया है। एग्रीस्टेक पोर्टल में किसान को प्राप्त फार्मर आईडी के साथ उनके फॉर्म आईडी (खसरे) को लिंक किया जाना है।

वर्तमान में एग्रीस्टेक पोर्टल में पंजीकृत कृषक के ऐसे खसरे जो यूनीफाइड फार्मर पोर्टल में पंजीकृत थे वो कैरी फारवर्ड हो गए हैं परंतु वो समस्त खसरे एग्रीस्टेक में फार्मर आईडी के साथ लिंक नहीं है, उनमें से कुछ खसरे लिंक होने रह गए हैं। इन समस्त छुटे हुए खसरों को एग्रीस्टेक पोर्टल में माध्यम से जोड़ा जाना है ताकि समिति स्तर पर ये सभी खसरे खरीदी हेतु उपलब्ध हो सके।

नेचर फॉर्मिंग के लिए छत्तीसगढ़ में असीम संभावनाएं : श्री साय

मुख्यमंत्री ने सुनी 'मन की बात' की 128वीं कड़ी

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने रायपुर स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में प्रधानमंत्री के लोकप्रिय मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 128वीं कड़ी को सुना और इसे अत्यंत प्रेरणादायी बताया। उन्होंने कहा कि 'मन की बात' देश की सामूहिक चेतना का उत्सव बन चुका है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री द्वारा खाद्यान्न उत्पादन में रिकॉर्ड बढ़ोतरी, विभिन्न राज्यों में शहद प्रसंस्करण की उन्नत विधियां, शहद उत्पादन में वृद्धि, नौसेना सशक्तिकरण, नेवल म्यूजियम, नेचर फॉर्मिंग के महत्व, तथा सऊदी अरब में पहली बार सार्वजनिक मंच पर गीता की प्रस्तुति और लातविया सहित कई देशों में आयोजित गीता महोत्सवों के भव्य आयोजनों की प्रशंसा हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि नेचर फॉर्मिंग के लिए छत्तीसगढ़ में अपार संभावनाएं हैं और यहां के किसान व युवा उद्यमी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि देश के खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है और इसमें छत्तीसगढ़ का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री 'मन की बात' के माध्यम से वे सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आयामों से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ देशवासियों तक पहुँचाते हैं।

कृषि क्षेत्र में भारत ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। भारत ने 357 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन का रिकॉर्ड बनाया है। दस वर्ष पहले की तुलना में यह उत्पादन 100 मिलियन टन अधिक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि खेलों में भी भारत ने शानदार प्रदर्शन किया है और हाल ही में भारत को कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी मिलने की घोषणा देश के लिए गर्व का क्षण है।

कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री श्री केदार कश्यप, केबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी रजवाड़े, कैबिनेट मंत्री श्री खुशवंत साहेब, जगदलपुर विधायक श्री किरण सिंह देव, रायपुर पश्चिम विधायक श्री राजेश मूणत, रायपुर ग्रामीण विधायक श्री मोतीलाल साहू, विधायक श्री अनुज शर्मा, पूर्व विधायक आरंग श्री नवीन मार्कण्डेय, विभिन्न निगम-मंडलों एवं आयोगों के अध्यक्ष तथा बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कृषि महाविद्यालय, रायपुर के सभागार में प्रधानमंत्री की 'मन की बात' कार्यक्रम के 128वें संस्करण को सुनते हुए कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, कुलसचिव,निदेशक अनुसंधान एवं छात्र-छात्राएं।

पीएम आशा योजना से दलहन-तिलहन की होगी समर्थन मूल्य पर खरीदी

मूंग, उड़द, मूंगफली एवं सोयाबीन की खरीदी 28 फरवरी 2026 तक

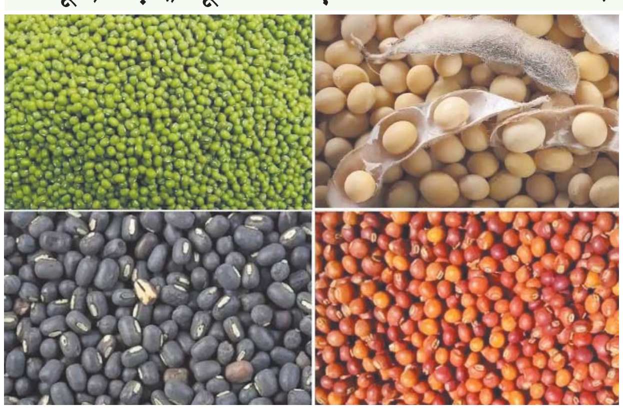

रायपुर। किसानों की आय में वृद्धि तथा दलहन-तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (पीएम आशा योजना) अंतर्गत समर्थन मूल्य पर दलहन-तिलहन फसलों की खरीदी के लिए व्यापक तैयारी की गई है। सहकारी समितियों के माध्यम से होने वाली इस खरीदी से किसानों को सीधे लाभ मिलेगा। इसके लिए शासन ने अरहर, मूंग, उड़द, सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, चना एवं मसूर की खरीदी हेतु निर्धारित तिथियाँ घोषित कर दी हैं।

अधिसूचना के अनुसार अरहर और सरसों की खरीदी 15 फरवरी से 15 मई 2026 तक, मूंग, उड़द, मूंगफली एवं सोयाबीन की खरीदी 1 दिसम्बर से 28 फरवरी 2026 तक तथा चना व मसूर की खरीदी 1 मार्च से 30 मई तक की जाएगी। खरीदी कार्य के लिए नाफेड उपार्जन एजेंसी के रूप में कार्य करेगी।

कृषि विभाग ने खरीफ और रबी दोनों मौसम में दलहन-तिलहन के उपार्जन को लेकर तैयारियाँ प्रारंभ कर दी हैं। फसलों के उपार्जन हेतु शासन द्वारा प्रति एकड़ अधिकतम उपार्जन सीमा निर्धारित की गई है। खरीदी का लाभ लेने के इच्छुक किसानों को कृषि विभाग द्वारा संचालित एकीकृत किसान पोर्टल में अनिवार्य रूप से पंजीकरण करना होगा। नाफेड द्वारा प्रदर्शित इस पंजीयन डेटा के आधार पर उपार्जन एवं भुगतान की प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित की जाएगी।

भारत सरकार तथा राज्य शासन द्वारा दलहन-तिलहन क्षेत्र के विस्तार के लिए यह महत्वपूर्ण पहल की गई है, जिससे किसानों में उत्साह है। रबी मौसम में चना, मसूर एवं सरसों की खरीदी से क्षेत्र में रबी फसलों का रकबा बढ़ने की संभावना है। इससे उन क्षेत्रों के किसानों को भी लाभ मिलेगा, जहां अब तक प्रमुख रूप से केवल खरीफ में धान की खेती की जाती थी। किसानों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कृषि विभाग द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, नेशनल मिशन ऑन ऑयलसीड, द्वि-फसलीय क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम तथा आत्मा योजना के तहत अनुदान सहायता भी दी जा रही है। कृषि विभाग ने किसानों से अपनी उपज को समर्थन मूल्य पर विक्रय करने की अपील की है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।

- महाकवि कालिदास

दस्तावेज़ों की विसंगतियाँ : ग्रामीण भारत की अनसुनी पीड़ा

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी भू-राजस्व ऋण पुस्तिका (B-1/खसरा) में वही नाम दर्ज पाए जाते हैं जो प्रचलन में रहे—भले ही वे मात्राओं, उच्चारण या वर्तनी की दृष्टि से गलत ही क्यों न हों। नई पीढ़ी की साक्षरता बढ़ने से अब स्कूल प्रमाण-पत्र के अनुरूप नाम दर्ज कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है, लेकिन चालीस-पचास वर्ष से अधिक आयु वाले किसानों के दस्तावेज़ों में प्रचलित नामों की त्रुटियाँ आज भी आम हैं। इन त्रुटियों के कारण दस्तावेज़ों में असमानता बनी रहती है, और उन्हें ठीक करवाना अक्सर किसानों के लिए चुनौतियों से भरा होता है।

सितंबर 2010 में जब आधार पंजीयन की शुरुआत हुई, तब बड़ी संख्या में नामों में गलतियाँ हुईं, जिन्हें ठीक कराने में वर्षों लगे। दुर्भाग्य से यह समस्या आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। खेतों के कागज़ों और आधार में नाम का अंतर, परिवार के मुखिया की मृत्यु पर उत्तराधिकार दर्ज करते समय पटवारी स्तर पर होने वाली त्रुटियाँ, मात्राओं का गलत लिखना तथा ग्रामीणों द्वारा बताए गए उपनाम या लघुनाम को ही दर्ज कर देना—ये सभी कारण आगे चलकर किसान के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

राजू, मधु, मुन्नू जैसे घरेलू लघुनाम अक्सर रिकॉर्ड में वास्तविक नाम के स्थान पर चढ़ जाते हैं। जब किसान को किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना हो या किसी सरकारी लाभ का

आवेदन करना हो, तब दस्तावेज़ों के नाम मेल न खाने पर उन्हें बार-बार तहसील और बैंक के चक्कर लगाने पड़ते हैं। इस प्रक्रिया में समय के साथ मानसिक उत्पीड़न भी झेलना पड़ता है।

आज आधार केवल पहचान पत्र नहीं, बल्कि बैंकिंग, छात्रवृत्ति, सरकारी योजनाओं, परीक्षाओं और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच का मूल आधार बन चुका है। ऐसे में सभी दस्तावेज़ों—आधार, पैन कार्ड, स्कूल अंकसूची, भू-राजस्व रिकॉर्ड—में नाम और जन्मतिथि का समान होना अत्यंत आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अधिक होने से यह सुधार अपेक्षाकृत सरल है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

ग्रामीणों—विशेषकर किसानों के लिए दस्तावेज़ों में एकरूपता सुनिश्चित करना अब एक अनिवार्य प्रशासनिक सुधार होना चाहिए। इसके लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाने की आवश्यकता है, ताकि नामों और जन्म तिथियों में असमानता दूर हो और किसान योजनाओं का लाभ सहजता से प्राप्त कर सकें।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं और ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं से भली-भाँति परिचित हैं। उनके पास इस दिशा में व्यापक सुधार करने का अवसर और अधिकार, दोनों हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में दस्तावेज़ सुधार अभियान शुरू करवाकर वे करोड़ों किसानों की प्रशासनिक समस्याओं को अत्यंत हद तक सरल कर सकते हैं।

यह पहल केवल सुविधा नहीं, बल्कि किसान सम्मान और सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगी।

पर्यावरण और स्वास्थ्य की राह

क्यों जरूरी है वनस्पति-आधारित आहार ?

✦ ज्ञान चंद पाटनी

जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रहे, जबकि उपभोक्तावादी जीवनशैली ग्रीनहाउस गैसों को और बढ़ा रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार पादप-आधारित आहार अपनाना उत्सर्जन घटाने का प्रभावी तरीका है। पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थ न केवल पर्यावरण को बचाते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाते हैं, जिससे स्थायी विकास की राह सुगम होती है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार प्रयास हो रहे हैं, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिल पा रही। आधुनिक विकास की परिभाषा और उपभोक्तावाद के चलते ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना अब भी बड़ी चुनौती है। इस दौर में पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना जरूरी हो गया है। इसके लिए आमजन को खुद भी जागरूक होना पड़ेगा। खानपान की आदतों को पर्यावरण अनुकूल बनाकर हम जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं। इस बात को समझना होगा कि पेड़-पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने से जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटना संभव है और यह इंसानों के स्वास्थ्य के लिए भी बेहतर है।

संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मांस और अन्य पशु उत्पादों की बजाय वनस्पति-आधारित आहार अपनाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आती है। इससे वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही ऐसे आहार से हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह जैसे रोगों का जोखिम भी कम होता है, जिससे इंसानी सेहत में भी सुधार होता है।

असल में पशु ग्रीनहाउस गैसों के बड़े स्रोतों में से एक हैं। मवेशी मीथेन जैसी गैसों का उत्सर्जन करते हैं, जो तापमान में कार्बन डाइऑक्साइड से कई गुना अधिक वृद्धि करती हैं। मीथेन का उत्पादन पशुओं की सामान्य पाचन प्रक्रिया का हिस्सा है और पशु आधारित खाद भी मीथेन उत्सर्जन को बढ़ावा देती है।

पेड़-पौधे यानी पादप आधारित खाद्य पदार्थों के उत्पादन में पशु आधारित उत्पादों की तुलना में कम भूमि, कम पानी और कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम होता है। विभिन्न रिपोर्टों से यह भी पता चलता है कि 2050 तक अगर मांस और डेयरी की खपत में उल्लेखनीय कमी आ जाए और लोग केवल पादप-आधारित खाद्य पदार्थों को अपनाएं, तो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 70 प्रतिशत तक की आश्चर्यजनक कमी हो सकती है।

पादप आधारित आहार एक संतुलित और पौष्टिक आहार माना जाता है, जो शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। इस आहार में फलों, सब्जियों, दालों, मेवों और साबुत अनाज की प्रचुर मात्रा होती है, जो शरीर को कैंसर, उच्च रक्तचाप और मोटापे जैसी बीमारियों से बचाते हैं।

कई प्रमुख रिपोर्टों और सर्वेक्षणों से पता चलता है कि पादप आधारित आहार अपनाने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है और यह प्रवृत्ति भविष्य में और भी तेज हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व बैंक सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान पादप आधारित आहार को जलवायु परिवर्तन से लड़ने में एक प्रभावी उपाय मानते हैं। पशु आधारित उत्पादों के कारण पैदा होने वाली मीथेन को कम करने के लिए न्यूजीलैंड और डेनमार्क जैसे कुछ देशों ने कर नीति भी लागू करने की योजना बनाई है, ताकि लोग मांस की बजाय पादप आधारित आहार की ओर बढ़ें। पर्यावरणीय हितों के कारण विश्वभर में शाकाहार ही नहीं, वीगन आहार की तरफ भी झुकाव बढ़ रहा है। वीगन आहार एक ऐसा शाकाहारी आहार है जिसमें केवल पेड़-पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं। इसमें कोई भी पशु-उत्पाद जैसे मांस, मछली, डेयरी (दूध, दही, पनीर), अंडे और शहद आदि शामिल नहीं होते। यह आहार पशु-आधारित पदार्थों से मुक्त होता है।

इसमें दोराय नहीं है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पशु आधारित आहार की बजाय पादप आधारित आहार को बढ़ावा देना होगा। पशु उत्पादों पर सब्सिडी को कम करने के साथ फलों, अनाज और सब्जियों की खेती को बढ़ावा देना जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य दोनों के लिहाज से आवश्यक है।

पेड़—पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देकर न केवल पर्यावरण और जलवायु को संरक्षित किया जा सकता है बल्कि मानव स्वास्थ्य में भी सुधार किया जा सकता है। इसके जरिए प्राकृतिक संसाधनों की बचत, पर्यावरण संरक्षण तथा स्वास्थ्य सुधार संभव है। इसलिए, सरकारों, नीति निर्माताओं और समाज को इस दिशा में सार्थक कदम उठाने चाहिए। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सरकारों को तो सक्रियता दिखानी ही होगी, आम आदमी को भी इस कार्य में अपना योगदान देना होगा।

(सप्रेस)

कृषि और बागवानी—दोनों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी

खरीफ उत्पादन 38.70 लाख टन बढ़ा, बागवानी उत्पादन 3690 लाख टन के पार

नईदिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गत सप्ताह खरीफ 2025-26 की प्रथम अग्रिम अनुमान रिपोर्ट और बागवानी 2024-25 की तृतीय अग्रिम अनुमान रिपोर्ट जारी करते हुए बताया कि कृषि-बागवानी दोनों क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति दर्ज हुई है।

खरीफ 2025-26: कुल खाद्यान्न 1733.30 लाख टन का अनुमान

चावल: 1245.04 लाख टन (17.32 लाख टन अधिक), **मक्का :** 283.03 लाख टन (34.95 लाख टन अधिक), **मोटा अनाज:** 414.14 लाख टन, **दलहन :** 74.13 लाख टन (तूर 35.97 लाख टन, उड़द 12.05, मूंग 17.20), **तिलहन :** 275.63 लाख टन (मूंगफली 110.93, सोयाबीन 142.66), **गन्ना:** 4756.14 लाख टन, **कपास:** 292.15 लाख गांठें। श्री चौहान ने कहा कि अनुकूल मानसून और तकनीकी प्रगति से प्रमुख खरीफ फसलों में व्यापक बढ़ोतरी का अनुमान है।

बागवानी 2024-25: उत्पादन बढ़कर 3690.55 लाख टन

कुल बागवानी क्षेत्रफल : 294.88 लाख हेक्टेयर (+4 लाख हेक्टेयर), **कुल उत्पादन :** 3690.55 लाख टन (+143.11 लाख टन)

फल और सब्जियों में जोरदार वृद्धि

फल: 1187.60 लाख टन (+5.12%)
सब्जियाँ: 2156.84 लाख टन (+4.09%)
प्याज : 307.89 लाख टन (+26.88%)
टमाटर: 194.68 लाख टन
आलू: 581.08 लाख टन

अन्य बागवानी फसलें

सुगंधित व औषधीय पौधे: 7.81 लाख टन
मसाले: 125.03 लाख टन (लहसुन, अदरक, हल्दी में वृद्धि).

संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसम्बर से

नई दिल्ली। संसदीय कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू ने बताया कि संसद का शीतकालीन सत्र 1 से 19 दिसंबर तक चलेगा। श्री रिजिजू ने बताया कि राष्ट्रपति ने सरकार के शीतकालीन सत्र के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। संसद का ये सत्र अन्य सत्रों के मुकाबले छोटा होगा।

देश में गेहूं बुवाई ने पकड़ी रफ्तार

अब तक 306 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोनी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 21 नवंबर 2025 तक कुल 306.31 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई पूरी की जा चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 272.78 लाख हेक्टेयर की तुलना में 33.53 लाख हे. अधिक है। वहीं गेहूं की बोनी 128 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में कर ली गई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 107 लाख हेक्टेयर हुई थी।

इस वर्ष देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं का क्षेत्र बढ़कर 128.37 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष से 21.27 लाख हेक्टेयर अधिक है। गत समान अवधि में 107.09 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। उधर धान की बुवाई भी 8.26 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, जो गत वर्ष समान अवधि में 7.59 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी।

दलहन

दालों की बुवाई ने इस सीजन में विशेष बढ़त दर्ज की है। दालों के कुल रकबे में 5.21 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 73.36 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गया है। चना 53.71 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जिसमें 4.41 लाख हेक्टेयर की बढ़त दर्ज हुई।

मोटा अनाज

सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही 'श्री अन्न' (मिलेट्स) श्रेणी में भी ठोस वृद्धि देखी गई। इन फसलों के तहत क्षेत्र बढ़कर 19.69 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17.26 लाख हेक्टेयर था।

तिलहन

तिलहन फसलों की बुवाई में इस वर्ष अच्छा सुधार देखने को मिला है और कुल क्षेत्रफल में 3.94 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहनों में सबसे अधिक बढ़ोतरी रेपसीड और सरसों में हुई, जिनका क्षेत्र बढ़कर 73.80 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है-यह पिछले वर्ष समान अवधि में 72.69 लाख हेक्टेयर था।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
21 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**128.37**	**107.09**
चावल	**42.93**	**8.26**	**7.59**
दालें	**140.42**	**73.36**	**68.15**
चना	100.99	53.71	49.30
मसूर	15.13	9.01	8.57
मोटे अनाज	**55.33**	**19.69**	**17.26**
ज्वार	24.62	8.99	8.43
मक्का	23.61	6.57	5.38
तिलहन	**86.78**	**76.64**	**72.69**
सरसों	79.17	73.80	69.58
मूंगफली	3.69	1.12	1.27
अलसी	1.93	0.98	1.39
कुल	**637.81**	**306.31**	**272.78**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत : कृषि मंत्रालय

हरित ईंधन और महिला-अनुकूल मशीनें-भारत की नई खेती का भविष्य

EIMA Agrimach India 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत की कृषि को 2047 के विजन के अनुरूप आधुनिक, टिकाऊ और श्रम-सहज बनाने के लिए हरित ऊर्जा आधारित मशीनरी और महिला किसानों के लिए जेंडर-फ्रेंडली उपकरण अनिवार्य हैं। यह संदेश केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने EIMA Agrimach India 2025 के उद्घाटन सत्र में दिया। राष्ट्रीय कृषि अखबार कृषक जगत एवं ग्लोबल एग्रीकल्चर मैगज़ीन इस कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर थे।

इलेक्ट्रिक और CBG ट्रैक्टर—भारत की भविष्य की खेती

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि अगले 5-10 वर्षों में कृषि मशीनरी को इलेक्ट्रिक एवं कम्प्रेस्ड बायोगैस (CBG) जैसे हरित ईंधनों की ओर तेजी से स्थानांतरित करना होगा।उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर और CBG आधारित मशीनरी किसानों की रखरखाव व परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी लाएगी।

मंत्रालय भी भविष्य की नीतियों में ऐसी तकनीकों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

महिला किसानों के लिए 'श्रम-कम' करने वाली मशीनें जरूरी

महिला किसानों को कृषि की 'रीढ़' बताते हुए उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किए जाने के बाद उद्योग की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जेंडर बजटिंग का अर्थ केवल स्वामित्व नहीं, बल्कि ऐसे उपकरण उपलब्ध कराना है जो उनका शारीरिक बोझ कम कर सकें—चाहे वे मैनुअल हों या मोटरचालित।

भारत-इटली कृषि सहयोग का नया दौर

भारत में इटली के राजदूत एंटोनियो बार्टोली ने बताया कि कृषि सहयोग बढ़ाने के लिए जल्द ही नई दिल्ली स्थित दूतावास में अग्रि-अताशे नियुक्त करने की दिशा में काम चल रहा है।

उन्होंने कहा कि करीब 20 इतालवी कंपनियां भारत में उत्पादन कर रही हैं तथा इस संख्या को बढ़ाने की योजना है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार को 20 अरब यूरो तक ले जाने का लक्ष्य रखा है।

कृषि को 'सेवा' के रूप में विकसित करने की जरूरत

आयोजन समिति के चेयरमैन एवं TAFE के बोर्ड निदेशक टी.आर. केसवन ने कहा कि सीडर जैसे महंगे उपकरणों का उपयोग किसानों द्वारा केवल कुछ दिनों के लिए किया जाता है, इसलिए कृषि को सेवा-आधारित मॉडल पर ले जाना होगा। ऐसे मॉडल में किसान उपकरणों को किराये पर लेकर उत्पादन लागत घटा सकेंगे।

भारत में मशीनीकरण बाजार दोगुना होने की ओर

फेडेरुनाकोमा की महानिदेशक सिमोना रापास्तेला ने बताया कि भारत का कृषि मशीनीकरण बाजार 2023 में 13.7 बिलियन डॉलर था, जो 2033 तक 31.6 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। भारतीय-इतालवी साझेदारी इस वृद्धि में अहम भूमिका निभाएगी।

पे-पर-यूज मॉडल से मशीनीकरण में आएगी रफ्तार

कार्यक्रम में FICCI–PwC की संयुक्त रिपोर्ट 'Farm Mechanisation: The Path Towards a Future-Ready India' जारी की गई। PwC के पार्टनर शशि कांत सिंह ने कहा कि व्यक्तिगत स्वामित्व के बजाय पे-पर-यूज मॉडल अपनाने से देशभर में मशीनीकरण और तेजी से बढ़ सकेगा।

इटैलियन ट्रेड एजेंसी की उप-आयुक्त सबरीना मंगियालावोरी ने बताया कि भारतीय किसान जुताई, बुवाई, सिंचाई, फसल संरक्षण और थ्रेसिंग जैसे आधुनिक समाधानों को तेजी से अपना रहे हैं। Corteva Agriscience के दक्षिण एशिया अध्यक्ष सुब्रत गीड ने कहा कि 2050 तक वैश्विक जनसंख्या 1000 करोड़ तक पहुंच सकती है, जिसमें भारत की सबसे बड़ी हिस्सेदारी होगी। ऐसे में मशीनीकरण ही उत्पादन बढ़ाने का सबसे प्रभावी रास्ता है।

गेहूं की सफल खेती के लिये अपनायें इन सूत्रों को

● उपेन्द्र सिंह ● कैलाश चन्द्र शर्मा
● दिलीप कुमार वर्मा ● कुलदीप सिंह सोलंकी

● खेत की तैयारी (जुताई तथा पठार) खरीफ फसल कटते ही करें।

● पलेवा नहीं करें, बल्कि सूखे में बुवाई करके तुरन्त सिंचाई करें।

● क्षेत्र के लिए अनुशंसित प्रजातियों का ही इस्तेमाल करें। प्रजाति का चुनाव अपने संसाधनों यानि उपलब्ध सिंचाई की मात्रा तथा आवश्यकताओं के अनुरूप करें।

● सूखा रोधी एवं कम सिंचाई चाहने वाली उन्नत किस्मों का अधिकाधिक उपयोग करें।

● पोषक तत्वों का उपयोग मृदा स्वास्थ्य जाँच रिपोर्ट के आधार पर करें।

● नत्रजन: स्फुर: पोटाश संतुलित मात्रा अर्थात् 4:2:1 के अनुपात में डालें।

● ऊँचे कद की (कम सिंचाई वाली) जातियों में नत्रजन: स्फुर: पोटाश की मात्रा 80:40:20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई से पूर्व ही दें।

● बौनी शरबती किस्मों को नत्रजन:स्फुर:पोटाश की मात्रा 120:60:30 तथा मालवी किस्मों को 140:70:35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर दें।

● नत्रजन की आधी मात्रा और स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई पूर्व दें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई (बुआई के 20 दिन बाद) देनी चाहिये।

● बुवाई से पहले मिश्रित खाद जैसे 12:32:16 तथा यूरिया का उपयोग करें।

● मृदा में जीवांश पदार्थ यानि कार्बनिक या हरी खादों का प्रति तीसरे वर्ष प्रयोग करें ताकि भूमि को सूक्ष्म तत्वों की कमी से बचा जा सके।

● बीज दर के लिए हमेशा याद रखें कि बड़े दाने वाले बीज की दर अधिक रखी जाती है तथा छोटे दाने के लिए कम। इसलिये 1000 दाने गिनें इसका वजन करें, जितने ग्राम वजन होगा उतने ही किलोग्राम बीज/एकड़ क्षेत्र के लिये पर्याप्त होगा।

● खाद तथा बीज अलग-अलग बोयें, खाद गहरा (ढाई से तीन इंच) तथा बीज उथला (एक से डेढ़ इंच गहरा) बोयें, बुवाई पश्चात पठार/पाटा न करें।

● बुवाई के बाद खेत में दोनों ओर से (आड़ी तथा खड़ी) नालियाँ प्रत्येक 15-20 मीटर (खेत के ढाल के अनुसार) पर बनायें तथा बुवाई के तुरन्त बाद इन्हीं नालियों द्वारा बारी- बारी से क्यारियों में सिंचाई करें।

● अर्द्धसिंचित/कम सिंचाई (1-2 सिंचाई) वाली प्रजातियों में एक से दो बार सिंचाई 35-40 दिन के अंतराल पर करें।

● पूर्ण सिंचित प्रजातियों में 20-20 दिन के अंतराल पर 4 सिंचाई करें।

● सिंचाई समय पर, निर्धारित मात्रा में, तथा अनुशंसित अंतराल पर ही करें।

● खड़ी फसल में डोरे (व्हील हो) या मजदूरों द्वारा खरपतवारों की सफाई करायें।

● खेती में जहरीले रसायनों का उपयोग सीमित करें। रोग व नीदा नियत्रंण के लिये जीवनाशक रसायनों का उपयोग वैज्ञानिक संस्तुति के आधार पर ही करें।

● चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के लिये 2-4 डी 650 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., अथवा मैटसल्फ्युरॉन मिथाइल 4 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

● संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के लिये क्लॉडीनेफॉप प्रोपरजिल - 60 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

● दोनों प्रकार के खरपतवारों के लिये: एटलान्टिस 400 मिलीलीटर अथवा वैस्टा 400 ग्राम अथवा सल्फोसल्फ्युरॉन 25 ग्राम सक्रिय तत्व/हे. अथवा सल्फोसल्फ्युरॉन 25 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., .मैटसल्फूरॉन मिथाइल 4 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

● गेरूआ रोग से बचाव तथा कुपोषण निवारण के लिए कम से कम आधे क्षेत्रफल में मालवी गेहूं की नई किस्मों की खेती अवश्य करें।

● सतत अच्छी उपज के लिए फसल विविधता एवं किस्म विविधता अपनायें।

● फसल अवशेषों को जलायें नहीं, उनकी खाद बनायें।

● परस्पर सहभागिता व सहकारी समूहों के माध्यम से गेहूं की सामुदायिक खेती, वैज्ञानिक भडारण व यथोचित समय पर बिक्री द्वारा खेती का लाभांश बढ़ायें।

मध्य भारत के लिये अनुशंसित गेहूं की नवीन प्रजातियाँ

बुवाई अवस्था	बुवाई का समय	सिंचाई	प्रजातियाँ	
			चन्दौसी/शरबती	कठिया/मालवी
अगेती	20 अक्टूबर से 10 नवम्बर	1-2 सिंचाई	एच.आई. 1605 (पूसा उजाला), जे-डब्ल्यू. 3020, जे-डब्ल्यू. 3173, जे-डब्ल्यू. 3211, जे-डब्ल्यू. 3269, एम-पी- 3288, डी.बी.डब्ल्यू. 110 एच.आई. 1655 (पूसा हर्षा)	एच.आई. 8802 (पूसा गेहूँ 8802), एच.आई. 8805 (पूसा गेहूँ 8805), एच.आई. 8823 (पूसा प्रभात), एच.आई. 8830 (पूसा कीर्ति)
समय से	11 से 25 नवम्बर	4-5 सिंचाई	जी.डब्ल्यू. 366, जी.डब्ल्यू. 513, एच.आई.1544 (पूर्णा), एच.आई.1636 (पूसा वकुला) एच.आई 1650 (पूसा ओजस्वी)	एम.पी.ओ.1255, एच.आई. 8663 (पोषण), एच.आई. 8713 (पूसा मंगल), एच.आई.8737 (पूसा अनमोल), एच.आई. 8759 (पूसा तेजस) एच.आई. 8826 (पूसा पोष्टिक)
पिछेती	26 नवम्बर से 5 जनवरी	4-5 सिंचाई	जे-डब्ल्यू.1202, जे-डब्ल्यू.1203, एम.पी. 3336, राज. 4238, एच.डी.2932 एच.आई.1634 (पूसा अहिल्या)	-

फसलों में राइजोबियम की उपयोगिता

● गिरिराज चौधरी
राजमाता विजियाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
● हंसा चौधरी, बनारस हिंदु यूनिवर्सिटी, वाराणसी

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसमें लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत दलहनी फसलों का एक प्रमुख उत्पादक देश है, विश्व में दलहन उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। जिसमें विभिन्न प्रकार के दलहनी फसलों की खेती की जाती है जैसे चना, मूँग, मटर, उड़द, अरहर, लोबिया, मूँगफली, सोयाबीन इत्यादि, जो शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है, दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को नाइट्रेट के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है तथा मृदा में पहले से मौजूद अघुलनशील पोषक तत्व जैसे फास्फोरस आदि घुलनशील होकर पौधों को आसानी से उपलब्ध होते हैं। चूंकि जीवाणु प्राकृतिक है, इसलिए इनके प्रयोग से भूमि की उवर्राशक्ति बढ़ती है और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ता। जैव उर्वरक रसायनिक उर्वरकों के पूरक भी है, रसायनिक उर्वरक के पूरक के रूप में जैव उर्वरक के प्रयोग से हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक एक जीवित उर्वरक है जो सूक्ष्मजीव जैसे जीवाणु, कवक आदि किसी नमी धारक पदार्थ के साथ मिश्रित होते हैं जो भूमि में डालने पर उसकी उपज बढ़ाने के साथ साथ उर्वराशक्ति में भी वृद्धि का कार्य करते हैं। सूक्ष्मजीवों की निर्धारित मात्रा को किसी नमी धारक धूलीय पदार्थ के साथ तैयार किये जाते हैं यह प्राय: 'कल्चर' के नाम से बाजार में उपलब्ध है।

बीज उपचारित करने की विधि

● बोने से पूर्व बीज को साफ पानी से धोकर सुखा लें।

● बीज उपचारित करने से पहले 100 ग्राम गुड़ आधा लीटर पानी में डालकर पन्द्रह मिनट तक उबालें। यदि गुड़ न हो तो गोंद का भी प्रयोग किया जा सकता है।

● घोल को अच्छी तरह ठंडा होने पर इस घोल में एक पैकेट राइजोबियम जीवाणु कल्चर का घोल डालें, और अच्छी तरह कल्चर को घोल में मिलायें।

● आधा एकड़ के लिए पर्याप्त बीज को कल्चर के घोल में डालकर साफ हाथों से अच्छी तरह मिला दें।

राइजोबियम क्या है ?

दलहनी (फलीदार) पौधों की जड़ों में ग्रंथियां पाई जाती हैं उनमें राइजोबियम नामक जीवाणु पाया जाता है जो वायुमंडलीय नत्रजन का स्थिरीकरण कर फसल की पैदावर बढ़ाने के साथ-साथ उसकी उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है।

राइजोबियम कल्चर के लाभ

राइजोबियम जीवाणु वातावरण मे व्याप्त नत्रजन का स्थिरीकरण कर पौधों की जड़ों तक घुलनशील अवस्था में पहुंचाते हैं। अत: दलहनी फसलों में रसायनिक खाद की कम आवश्यकता होती है। राइजोबियम के प्रयोग से दलहन की उपज में कई प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है (अपवाद=राजमा)। राइजोबियम के प्रयोग से भूमि में नत्रजन की मात्रा बढ़ जाती है तथा उर्वरा बनी रहती है। दलहनों की जड़ों में विद्यमान जीवाणुओं द्वारा संचित नत्रजन अगली फसल द्वारा ग्रहण किया जाता है। राइजोबियम द्वारा यौगिकीक्रत नत्रजन कार्बनिक रूप में होने के कारण पूर्ण रूप से पौधों को प्राप्त होता है

सावधानियाँ

● प्रत्येक दलहन विशेष को उसके विशेष कल्चर से ही उपचारित करें। ● कल्चर के पैकेट पर लिखी अंतिम तिथि से पहले प्रयोग करें।

● बीज उपचारित करने की सारी तैयारियाँ करने के बाद कल्चर का पैकेट खोलें।

● बीजों को उपचारित करके कुछ समय के लिए छायादार जगह पर सुखाएँ, फिर सुखाने के तुरंत बाद बुवाई करें।

● यदि बीजों को कल्चर के साथ-साथ कीटनाशक व फफूंदनाशक रसायनों से उपचारित करना हो तो क्रमश: फफूंदनाशक, कीटनाशक और अंतत: राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

रबी रागी की उन्नत कृषि तकनीक

● राजेन्द्र पटेल, सक्ती (छ.ग.)

राग़ी (माडिया या मंडुवा) भारत की प्राचीनतम व महत्वूर्ण अनाज फसल है और दक्षिण भारत में राग़ी को प्रमुख भोजन के रूप में महत्व दिया जाता है। उत्तर भारत में राग़ी को खरीफ में मुख्य फसल एवं दक्षिण भारत में रबी व ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में उगायी जाती है।

मिट्टी

राग़ी की खेती कई तरह की भूमि में की जाती है, ऊपरी और कम उपजाऊ भूमि में भी ये फसल अच्छी पैदावार देती है लेकिन अच्छी उर्वरता एवं उच्च कार्बनिक पदार्थ युक्त दोमट मृदा, जिसकी जलधारण क्षमता अच्छी हो उपयुक्त मानी जाती है। इसे बढ़िया जल निकास वाली काली मिट्टी में भी उगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी

खरीफ फसलों के कटाई पश्चात अवशेषों एवं खरपतवार के अवशेष एकत्रित करके नष्ट कर दें। भूमि की एक बार गहरी जुताई के बाद एक या दो हल्की जुताई करके पाटा लगाकर समतल कर लें। गोबर की सड़ी खाद 3 से 4 टन प्रति एकड़ खेत में अच्छी तरह मिला दे। खेत में बड़े-बड़े सूखे व सख्त ढेले होने पर रोटावेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बना लें। इस प्रकार तैयार भूमि में कतार से राग़ी फसल की बुआई करें।

उन्नत किस्म

इंदिरा राग़ी-1, छत्तीसगढ़ राग़ी-2, छत्तीसगढ़ राग़ी-3, व्ही.एल. मंडुवा-379, व्ही.एल. 352, भैरवी (बी.एम. 9-1), व्ही.एल.-149

बुआई

बीजोपचार- प्रमाणित बीज का प्रयोग सर्वोत्तम है। स्वयं के बीज को बुआई के पूर्व बीज साफकरके फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या थायरम या कैप्टान 4 ग्राम प्रति किलो राग़ी बीज की दर से उपचारित कर सुखा लें। उसके बाद कीटनाशक दवा या गौ मूत्र या ब्रम्हास्त्र या बीजामृत 6 मिली प्रति किलो राग़ी बीज की दर से उपचारित कर सुखा लें। तत्पश्चात उपचारित बीज को एजेटोबैक्टर या एजोस्पिरिलम (नत्रजन स्थिरीकरण बैक्टीरियम) व पी.एस.बी. कल्चर की 15-25 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। रोपा राग़ी हेतु नर्सरी पौध (थरहा) का जड़ उपचार किया जा सकता है।

बीज बोने का उचित समय- रबी राग़ी की बुआई के लिए अक्टूबर-नवम्बर एवं ग्रीष्मकालीन राग़ी के लिए दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से जनवरी मध्य तक का समय उत्तम है। ठंड के कारण राग़ी के बीज का अंकुरण हेतु 7 दिन तक लग सकते हैं, इसलिए धान की तरह अंकुरित बीज की बुआई उत्तम रहता है। बोआई के 20-25 दिन बाद खेत में अतिरिक्त पौधों को उखाड़कर खेत के रिक्त स्थानों में रोपे (गैप फिलिंग) और थिनिंग ऑपरेशन करके खेत में उचित पौधों की संख्या को बनाए रखें।

राग़ी की बुआई सूखा छिटकवां, लेही विधि या कतारों में की जाती है, साथ ही रोपा पद्धति से रोपाई भी की जाती है। रोपा पद्धति में नर्सरी पौध (थरहा) के जड़ को उपरोक्त दवाओं से उपचारित कर रोपाई करें।

बीज दर: आदर्श पौध संख्या (1.6 से 2 लाख प्रति एकड़) और अधिक उपज प्राप्त करने के लिए छिटकवां पद्धति के लिए 5 किलो, कतार बोनी हेतु 3-4 किलो तथा रोपा हेतु 1.5-2 किलो प्रति एकड़ बीज उपयुक्त है।

खाद एवं उर्वरक

जैविक खाद जैसे की अच्छी सड़ी गोबर की खाद 3 से 4 टन प्रति एकड़ खेत में अच्छी तरह मिला दे या वर्मी कम्पोस्ट 3-4 क्वि. प्रति एकड़ उपयोग करने से उत्पादन के साथ फसल गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। मृदा परीक्षण के आधार पर हीं उर्वरकों का प्रयोग करें। राग़ी फसल उर्वरक रिस्पोंसिव है, अधिक उत्पादकता हेतु संतुलित उर्वरक प्रबंधन करें। प्राय: यह देखा गया है कि उर्वरक या पोषक तत्व की कमी से फसल की बढवार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सामान्य परिस्थिति में 16-24 किलो नत्रजन, 8-12 किलो फास्फोरस व 6-8 किलो पोटाश प्रति एकड़ की दर से दी जा सकती है। फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बोआई से पूर्व खेत में समान रूप से अवश्य डाले अन्यथा पौधे की बढवार कम होती है तथा नत्रजन की शेष मात्रा को दो किस्तों में अंकुरण के 25-30 दिन और 40-45 दिन बाद निदाई के पश्चात डालें।

सिंचाई

अच्छी उपज के साथ-साथ पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए सिंचाई आवश्यक है। राग़ी फसल की सिंचाई हेतु दो क्रांतिक अवस्था है, पहला कल्ले निकलने और दूसरा फूल आने की अवस्थायें इन दोनों अवस्थाओं में पानी की कमी होने से उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मिट्टी के प्रकार, मौसम की स्थिति व किस्म के अवधि के आधार पर 4 से 6 सिंचाई आवश्यक है। सामान्यत: सिंचाई बोआई के 20, 35, 48, 60 व 70 दिन बाद करें। शरद ऋतु में 18-22 दिन व गर्मी के मौसम में 9-11 दिन के अंतराल में सिंचाई गेहूँ या सरसों फसल की तरह स्प्रिंकलर से सिंचाई उत्तम रहती है, ग्रीष्मकालीन धान की तरह पानी भरकर ना रखें । राग़ी में पहली सिंचाई को बुआई के कम से कम 21 दिन बाद व दूसरी सिंचाई भी पहली सिंचाई के कम से कम 21 दिन बाद दें, जब जमीन में मध्यम दरारें दिखें ऐसा करने से प्राय: पौधे में कल्ले की संख्या ज्यादा देखी गयी है ।

राग़ी जलभराव की स्थिति सहन नहीं कर सकती है, इसलिए सिंचाई के उद्देश्य से कुंडों और मेड़ों को तैयार किया जाना बेहतर रहता है, यह सिंचाई और अतिरिक्त पानी की निकासी के दोहरे उद्देश्य को पूरा करता है।

निदाई-गुड़ाई

राग़ी की फसल को प्रथम 45 दिन तक खरपतवारों से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा उपज में भारी गिरावट आ जाती है। अत: राग़ी फसल में दो निदाई-गुड़ाई आवश्यक है। पहली निंदाई बुआई या रोपाई के 15-20 दिन में तथा दूसरी 30-35 दिन में करें। कतार बोनी में सायकल व्हील हो से गुड़ाई करने में आसानी होती है।

खरपतवारनाशी

अंकुरण पूर्व- खरपतवार अंकुरण के पूर्व खेत में आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 300-400 ग्राम प्रति एकड़ या ऑक्सीफ्लोरफेन 23.5 प्रतिशत ई.सी. 100 मिली. प्रति एकड़ बालू में मिलाकर 3 दिन के अंदर उपयोग करने से कुछ घास व चौड़ी पत्ती के खरपतवार नहीं उगते। केवल रोपा पद्धति में रोपाई के 5-6 दिवस में बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल 0.6 प्रतिशत+ प्रेटीलाक्लोर 6 प्रतिशत जीआर. (लोन्डेक्स पॉवर या इरेज स्ट्राँग) 4 किग्रा. प्रति एकड़ उपयोग करने से चौड़ी पत्ती, मोथा व सांवा घास पर प्रभावी नियंत्रण होता है।

अंकुरण पश्चात- बुआई के 15-20 दिन बाद बाईस्पायरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. 100-120 ग्राम प्रति एकड़ के उपयोग से घास कुल, चौड़ी पत्ती और मोथा कुल के खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण तथा बुआई के 25-30 दिन बाद मेटसल्फ्यूरॉन मिथाइल 20 प्रतिशत डब्ल्यूजी या डब्ल्यूपी 8-12 ग्राम प्रति एकड़ के उपयोग से चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार नियंत्रित होते है या 2,4-डी 58 प्रतिशत एस.एल.डब्ल्यू.एस.सी. की 400-500 मिली. प्रति एकड़ उपयोग से चौड़ी पत्ती, मोथा कुल व कुछ घास के खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण होता है।

कटाई

फसल पकने के बाद राग़ी की बालियों को हंसिये से काट कर 3-4 दिनों तक धूप में सुखाकर दानों को अलग एवं सफ़ाई कर बोरी में भर कर भण्डारित किया जाता है या बाजार में बेचा जाता है। मशीनीकृत कटाई व गहाई हेतु कम्बाइन हार्वेस्टर के उपयोग से समय व मेहनत की बचत होती है।

उपज

छिटका में 8-10, लेही में 9-11, कतार बोनी में 10-12 व रोपा विधि में 12-14 क्विंटल प्रति एकड़ दाने की उपज प्राप्त होती है एवं 20-25 क्विंटल चारे की पैदावार प्राप्त होती है।

सब्जियों में पोषक तत्वों का महत्व एवं कमी के लक्षण

● डॉ. रतनलाल सोलंकी

सब्जियों में पोष्टिक गुणों के बढ़ाने एवं अधिक पैदावार प्राप्त करने हेतु कई पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इनमें से कुछ की अधिक तथा कुछ तत्वों की कम मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। जिन तत्वों की अधिक मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। उन्हे मुख्य पोषक तत्व कहते हैं। परन्तु सब्जी उत्पादन में इन दोनों प्रकार के तत्वों का समान महत्व है। बीज के अंकुरण से पहले फसल की कटाई तक हुई अवस्था में इन तत्वों की कमी से पौधों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। यदि कमी को उर्वरकों द्वारा पूरा न किया जाय तो पौधे अपने अंगों जैसे पत्ती, फूल, फलों द्वारा कमी के प्रत्यक्ष संकेत जाहिर करने लगते हैं। इन संकेतों तथा लक्षणों को सही ढंग से पहचानना तथा उनका विधिवत उपचार करना एक सफल सब्जी उत्पादक के लिए नितांत आवश्यक होता है। इसलिए सब्जी उत्पादन से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए पोषक तत्वों को आवश्यकतानुसार डालते रहें। इसकी जानकारी के लिए कुछ पोषक तत्वों का महत्व तथा उनकी कमी के मुख्य लक्षण दिए जा रहे हैं।

नत्रजन

जीवित पदार्थों का यह एक मुख्य भाग है। इससें पौधों में वृद्धि तथा जनन कार्यों हेतु प्रोटीन, विटामिन,

एवं क्लोरोफिल का निर्माण होता है। क्लोरोफिल में नत्रजन होने के कारण पत्तियों वाली सब्जियों में नत्रजन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। नत्रजन की कमी से पत्तियां प्रारम्भ में पीली हरी तथा बाद में पीली पड़ जाती है पौधों की वृद्धि कम हो जाती है। फलों के आकार, तने और जड़ों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

टमाटर में नत्रजन की कमी से पौधों की वृद्धि रुक जाती है तथा उसका हरा रंग समाप्त हो जाता है। तने तथा पत्तियों की शिराओं का रंग हल्का बैंगनी हो जाता है। जड़ों की वृद्धि भी रुक जाती है। और बाद में भूरे रंग की होकर मर जाती है। पौधे के पीला हो जाने के कारण उनकी फूल वाली कलियां गिर जाती हैं। ऐसी हालत में पौधे पर बहुत कम फल लग पाते है। इसी प्रकार नत्रजन की कमी के लक्षण खीरा, कदद्दू, मूली, प्याज तथा अन्य फसलों में भी प्रकट होते है। इस समस्या को दूर करने के लिए गोबर की खाद और नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग करें।

फास्फोरस

फास्फोरस पौधे की प्रारम्भिक अवस्था में जड़ों

की अच्छी वृद्धि के लिए आवश्यक होता है। इससें पौधों कों मजबूती मिलती है तथा उसमें अधिक फूल आते हैं। जल्दी ही पकने की अवस्था आ जाती है। फास्फोरस से बीजों का गुण बढ़ जाता है। फली वाली सब्जियों में फास्फोरस जड़ ग्रंथियों के बैक्टिरिया को उत्तेजित कर नत्रजन स्थिरीकरण में सहायक होता फास्फोरस की कमी से पौधों की वृद्धि धीमी पड़ जाती है और तने पतले तथा रेशेदार हो जाते हैं। आलू में फास्फोरस की कमी से पौधों की पत्तियों एवं शिराओं तथा तनों विशेष रुप से नीचे की तरफ लाल बैंगनी रंग के धब्बे प्रकट हो जाते हैं। पौधों की वृद्धि धीमी पड़ जाती है और तने पतले तथा रेशेदार हो जाते हैं फलस्वरुप फसल देर से पकती है। आलू में फास्फोरस की कमी से पत्तियों के किनारे मुड़ जाते हैं। तथा बाद में कुछ झुलसे हुए दिखाई देने लगते हैं।

इसकी कमी से टमाटर की पत्तियों के निचले भाग पर लाल बैंगनी रंग के धब्बे दिखाई पड़ने लगते हैं, बाद में पूरा पौधा बैंगनी रंग का हो जाता है। मूली में भी उपरोक्त की भांति फास्फोरस की कमी से पत्तियों के नीचे का भाग लाल बैंगनी रंग का हो जाता है। प्याज में इसकी कमी के कारण पत्तियां छोटी रह जाती हैं।

पोटाश

पोटाश पौधों को बीमारी से बचाने की क्षमता प्रदान करता है। यह पौधों में स्टार्च तथा शर्करा बनाने तथा उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के

लिए सहायक होता है। यह बीज में गुदेदार भाग को बढ़ाता है आलू, शकरकन्द शलगम के उत्पादन में इसकी अत्याधिक आवश्यकता होती है। यह पौधों में पारी का संतुलन बनाये रखता है। भूमि में पोटाश की कमी होने पर पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे प्रकट होने लगते हैं। तथा पत्तियों के किनारे मुड़ने लगते हैं और पत्ती की सतह सूखी दिखाई देने लगती है। फल समान रुप से नहीं पकते हैं। टमाटर में पोटाश की कमी से फल नर्म हो जाते हैं। और पकाव समान रुप से नहीं होता है। पत्तागोभी में उसकी कमी से प्रारम्भ में पुरानी पत्तियों के किनारे सूखने लगते हैं। और बाद में ऊपर की ओर मुड़ने लगते हैं आलू में इसकी कमी से पत्तियों का रंग नीला हो जाता है। आलू बनाने वाला तना छोटा हो जाता है जिससे जड़ों की बढ़वार रुक जाती है। और अंत में आलू का आकार छोटा हो जाता है फलस्वरुप उपज घट जाती है।

कैल्शियम

कैल्शियम की कमी से पौधों का रंग हल्का हरा हो जाता है और पत्तियां पीछे की ओर मुड़ जाती है पौधा कमजोर हो जाता है। इसकी कमी से टमाटर के तने व पत्तियां ऊपर से नीचे की ओर सूखना प्रारम्भ कर देती हैं तथा फल के नीचे का भाग सूखकर सड़ने लगता है। मटर में प्रारम्भ में मध्य शिरा के पास लाल धब्बे बन जाते है। पौधे का रंग धीरे-धीरे सफेद होने लगता है और छोटा रह जाता है।

मैग्नीशियम

इसका मुख्य कार्य क्लोरोफिल का निर्माण करना

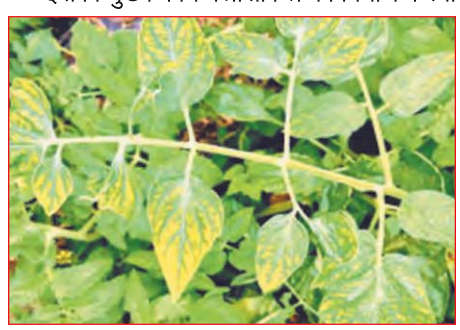

होता है मैग्नीशियम साधारण भूमि में भी पाया जाता है। परन्तु अम्लीय तथा अधिक रेतीली जमीन में इसकी कमी हो सकती है इसकी कमी से पत्तियों में रंग बिरंगे धब्बे पड़ जाते हैं। पुरानी पत्तियां अधिक प्रभावित होती हैं पत्तियों के शिरों तथा किनारों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं पातगोभी व फूलगोभी में इसकी कमी से चमकीले धब्बे बन जाते हैं। पौधे छोटे रह जाते हैं पत्तियों पर धारियां बन जाती हैं, अधिक प्रभाव होने पर धब्बे वाला मर जाता है। फसल देर से तैयार होती है।

मैगनीज

यह भी आक्सीकरण तथा अवकरण क्रिया में सहायक होता है। मृदा में मैग्निशियम की कम मात्रा में मैगनीज की मात्रा होने पर पत्तियों का रंग पीला हो जाता है। टमाटर के पौधों में मैगनीज की कमी से पत्ती हल्की हरी होकर पीली पड़ जाती है। पौधों में फूल बहुत कम लगते हैं। यह सारे लक्षण क्लोरोफिल की उचित मात्रा में संश्लेषण न होने से उत्पन्न होते हैं। मैगनीज की कमी 10-15 किग्रा/हेक्टर मैगनीज सल्फेट का मिट्टी में डालकर पूरी की जाती है।

आयरन

कोशिकीय श्वशन में आक्सीकरण तथा अवकरण क्रियाओं में आयरन का महत्वपूर्ण योगदान है। आयरन की कमी से पत्तियों के मध्य एवं अन्य शिराओं को छोड़कर शेष भाग पीला पड़ जाता है। इस स्थिति को ग्लोरोसिस कहते हैं। टमाटर पौधों में नई पत्तियों व क्लोरोसिस तथा ऊतकों का साथ हो जाता है। 8.0 से अधिक पी.एच. मान होने पर पौधे मृदा से आयरन नहीं ग्रहण कर पाते हैं। मृदा में आयरन की कमी की पूर्ति 10 किग्रा प्रति हेक्टेयर फेरस सल्फेट देकर के की जा सकती है।

बोरोन

बोरोन की कमी का प्रभाव पौधों की वृद्धि पर पड़ता है। पौधों की कलिका नष्ट हो जाती है। जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है मृदा में बोरोन की कमी से पौधों की नई पत्तियां मुड़ जाती है। ब्राउन की बीमारी हो जाती है इसकी कमी से फूलगोभी के फूल तथा तने पर धब्बे पैदा हो जाते हैं। फूल भूरा छोटा व कड़वा हो जाता है इसके उपचार हेतु 5 किग्रा/ हेक्टर बोरेक्स डालना लाभदायक होता है।

जिंक

पौधों की समुचित वृद्धि के लिए जिंक भी महत्वपूर्ण है यह पौधे की वृद्धि तथा हारमोंस की क्रियाशीलता पर प्रभाव डालता है। इसकी कमी से बीज निर्माण रुक जाता है। टमाटर की पत्तियां पीली तथा छोटी हो जाती हैं। जिंक की कमी की पूर्ति 50 किग्रा/ हेक्टेयर जिंक सल्फेट मृदा में मिलाकर की जा सकती है। जिंक सल्फेट को फास्फोरस वाली खाद के साथ मिलाकर नही डालें क्योंकि यह फास्फोरस से क्रिया करके अघुलनशील जिंक सल्फेट बना देता है।

कॉपर

क्लोरोफिल निर्माण में कॉपर का महत्वपूर्ण योगदान है। कॉपर की कमी से पौधों की वृद्धि रुक जाती है। और पत्तियां पीली पड़ जाती है। इसकी कमी से प्याज के वल्व मुलायम हो जाते हैं तथा उसकी परतें पीली पड़ जाती है। कॉपर की कमी की मृदा में 25 किग्रा/हे. कॉपर सल्फेट डालकर पूरा करें।

मोलिब्डेनम

यह एंजाइम की क्रियाओं पर प्रभाव डालता है। नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए आवश्यक होता है। फलीदार फसलों में वायुमंडल से नाइट्रोजन स्थिर करने की क्षमता को बढ़ाता है। टमाटर के पौधों में मोलिब्डेनम की कमी से पुरानी पत्तियां मुड़ जाती हैं। और शिराएं फूल कर पीली पड़ जाती है। इसकी कमी से फूलगोभी की पत्तियां सिकुड़ कर फीते के आकार की हो जाती है इसके उपचार हेतु 3-4 किग्रा सोडियम मोलिब्डेड प्रति हेक्टर की दर से भूमि में दें।

कृषि विज्ञान केन्द्र रायपुर में मिश्रित मत्स्य पालन प्रशिक्षण

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर द्वारा तीन दिवसीय 'मिश्रित मत्स्य पालन' विषय पर प्रशिक्षण हुआ। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में छत्तीसगढ़ राज्य के अलग- अलग जिलों से कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अजय कुमार वर्मा, अधिष्ठाता, स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी, इ.गां.कृ.वि. उपस्थित थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. गौतम रॉय ने अपने उदबोधन में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर में चल रही मछली पालन की विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से अवगत कराया। प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एस. सासमल ने अपने उद्बोधन में तीन दिवसीय प्रशिक्षण की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान 'मिश्रित मत्स्य पालन पद्धति' विषय पर तैयार तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. वर्मा ने कहा कि सिर्फ भारत से ही नही बल्कि विदेशों से भी प्रशिक्षणार्थी इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर में प्रशिक्षण लेने के लिए आए हैं, यह गर्व की बात है। इस प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र के बाद दो सत्रों में मिश्रित मत्स्य पालन पद्धति विषय पर डॉ. एस. आर गौर, प्राध्यापक एवं श्री तोषण कुमार ठाकुर, ने विस्तृत जानकारी दी।

प्रशिक्षण के दूसरे दिन डॉ. एस. सासमल एवं डॉ. अंकित ठाकुर ने मिश्रित मछली पालन के प्रायोगिक पहलुओं पर प्रक्षेत्र प्रशिक्षण दिया। इस कड़ी में तालाबों का चयन, मछली बीज संचयन, खाद प्रबंधन, प्राकृतिक भोजन उत्पादन आदि को प्रायोगिक रूप से प्रदर्शित किया गया।

प्रशिक्षण के अंतिम दिवस में श्री अमित वर्मा, मत्स्य निरीक्षक, मछली पालन विभाग,रायपुर ने मछली पालन में राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार के सब्सिडी स्कीम्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी साथ ही साथ किसान कैसे सब्सिडी का लाभ उठा सकते है उसके बारे में भी जानकारी दी।

'बड़ा कोसरा' की सफल खेती के लिए किसान मांडवी बना प्रेरक

रायपुर। पारंपरिक धान के साथ-साथ अब मिलेट फसलों जैसे रागी, कुल्थी, कोदो, मंडिया और कोसरा की वैज्ञानिक एवं नवाचार आधारित खेती तेजी से बढ़ रही है। इसी कड़ी में दंतेवाड़ा जिले के ग्राम पोटाली, पटेलपारा (विकासखंड कुआकोंडा) के किसान श्री देवा मांडवी 'बड़ा कोसरा' की आधुनिक तकनीक से खेती कर जिले की कृषि प्रगति का प्रेरक चेहरा बन गए हैं।

जैविक उपचारों से सुधार

श्री मांडवी ने एसएमआई तकनीक अपनाकर बड़ा कोसरा की खेती में एक सफल मॉडल प्रस्तुत किया है। निर्माण ऑर्गेनाइजेशन दंतेवाड़ा और कृषि विभाग ने उन्हें तकनीकी मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने 15-21 दिन की नर्सरी तैयार कर 30-30 सेंटीमीटर की दूरी पर एकल पौध रोपाई की। नियमित साइकिल वीडिंग, जीवामृत और हांडी दवा जैसे जैविक उपचारों से फसल की गुणवत्ता में भी सुधार आया। अगस्त में रोपी गई फसल आज प्रति पौधा 30-40 बालियों के साथ उत्कृष्ट स्थिति में खड़ी है।

खेती से हुआ लाभ

पिछले वर्ष अरकू (आंध्र प्रदेश) में हुए प्रशिक्षण और फसल भ्रमण ने श्री मांडवी को आधुनिक खेती की नई समझ दी, जिसे उन्होंने अपने खेत में सफलतापूर्वक लागू किया। श्री मांडवी बताते हैं कि एसएमआई तकनीक से बड़ा कोसरा की खेती करने का निर्णय मेरे लिए बहुत लाभदायक साबित हुआ। तकनीकी सहायता ने मुझे नई दिशा दी है।

किसानों की आय में वृद्धि

जिले के कई अन्य क्षेत्रों जैसे छिंदनार, बुधपदर, पालनार, भटपाल, गुटोली, गुमलनार, बड़े गुडरा, मोखपाल, बड़े तुमनार, छोटे तुमनार, बुरगुम, अचेली, बालूद, गंजेनार, पाहुरनार आदि ग्रामों में भी एसएमआई विधि से कोसरा की सफल रोपाई जारी है। भूमगादी समिति द्वारा किसानों को कोसरा चोप उपलब्ध कराया जा रहा है।

कृषक जगत
जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत
जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।
कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222
पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

पीपीएल एवं ज़ुआरी फार्महब ने उत्पादों का किया प्रदर्शन

'सी.बी. क्रॉप्स शो 2025' में पाँच राज्यों के किसानों को मिला उन्नत कृषि मार्गदर्शन

रायपुर। कृषि और बागवानी के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुए तीन दिवसीय 'सी.बी. क्रॉप्स शो' का सफल आयोजन गत दिनों चावड़ा बाग नर्सरी में किया गया। देश की दो प्रतिष्ठित कृषि कंपनियों- पारादीप फास्फेट लि. (पीपीएल) और ज़ुआरी फार्महब लि. ने इस महत्वपूर्ण प्रदर्शनी में अपने उन्नत उत्पादों का भव्य प्रदर्शन किया।

यह शो छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और झारखंड जैसे पाँच प्रमुख राज्यों के सब्जी उत्पादक किसानों को एक मंच पर लाया, जहाँ उन्हें नवीनतम कृषि तकनीकों और उत्पादों की विस्तृत जानकारी मिली।

किसानों में दिखा भारी उत्साह

तीनों दिन पीपीएल और ज़ुआरी फार्महब लि. के स्टाल पर किसानों की भारी भीड़ उमड़ी। किसानों ने कंपनियों के उन्नत उत्पादों जैसे उर्वरक, कीट नियंत्रण समाधान और फसल देखभाल उत्पादों जैसे कि जयकिसान नवरत्ना TSP, नैनो शक्ति नैनो डीएपी, नाइट्रोनिक 32, इंपैक्ट और जयकिसान ब्रांड के जल विलेय उर्वरकों (विशेष रूप से स्मार्ट सॉल्यूशन), बायो 20 एवं कैमफ्री वैमेक्स में गहरी रुचि दिखाई। कंपनियों के प्रतिनिधियों ने किसानों को केवल उत्पादों के उपयोग की जानकारी नहीं दी, बल्कि उन्हें मिट्टी की गुणवत्ता, फसल चक्र और प्रभावी कीट प्रबंधन पर भी उचित मार्गदर्शन प्रदान किया।

श्री अहलावत ने किया नेतृत्व

कंपनी की ओर से श्री अमरीश अहलावत चीफ मैनेजर मार्केटिंग डेवलपमेंट (छत्तीसगढ़) ने किसानों के साथ सीधा संवाद किया और उन्हें खेती की चुनौतियों से निपटने के लिए सर्वोत्तम समाधान सुझाए। श्री अहलावत ने जोर देते हुए कहा, 'किसानों को सही समय पर, सही मार्गदर्शन देना पीपीएल एवं ZFHL की प्राथमिकता है। इस शो ने हमें सीधे उन्नत कृषि करने वाले कृषकों तक पहुँचने का मौका दिया।' इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में किसानों को मार्गदर्शन देने के लिए अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे, जिनमें श्री अजय वर्मा (मैनेजर मार्केटिंग, रायपुर), श्री प्रहलाद भाड़े (क्रॉप केयर मैनेजर), श्री यादवेंद्र यादव (रायपुर), श्री नवीन बंसल (मैनेजर मार्केटिंग दुर्ग), श्री अनुराग गुप्ता (जेकेएस- धंमधा) और श्री धर्मेंद्र सैनी (जेकेएस- बेमेतरा) शामिल थे।

कृभको ने किया ग्रामीण खेलों का आयोजन

अंबिकापुर। गत दिनों कृभको द्वारा अंगीकृत ग्राम समूह के तहत शासकीय माध्यमिक शाला, मोतीपुर, जिला- सरगुजा के प्रांगण में ग्रामीण खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आशुतोष चंद्राकर राज्य प्रबंधक कृभको -छत्तीसगढ़, विशिष्ट अतिथि श्रीमती फिलसीता लकरा अध्यापिका एवं विद्यालय के समस्त शिक्षकगण तथा विद्यार्थीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में संस्था की ओर से श्री मनीष कुमार ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों को कृभको के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

मुख्य अतिथि श्री चंद्राकर ने कहा कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण स्तर के छात्र छात्राओं के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना है, जिससे सभी छात्र विद्या अध्ययन के साथ-साथ खेलकूद के प्रति जागरूक रहें और उनका सर्वांगीण विकास हो। इस प्रकार के कार्यक्रम ग्रामीण स्तर पर हर वर्ष आयोजित करना चाहिए जिससे की गाँव के बच्चों में खेल के प्रति रुचि जागृत हो। क्रिकेट के बाद वॉलीबाल खेल का आयोजन किया गया, दोनों खेलों के विजेता एवं उप-विजेता टीमों को कृभको सरगुजा की ओर से प्रथम एवं द्वितीय पुरुस्कार के रूप में स्मृति चिन्ह मुख्य अतिथि श्री चंद्राकर एवं श्रीमती लकरा द्वारा दिया गया, उपरोक्त कार्यक्रम में सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को कृभको सरगुजा द्वारा जर्सी, क्रिकेट किट, वॉलीबाल किट आदि खेल सामग्रियों का नि:शुल्क वितरण किया गया।

एरिज एग्रो ने मनाया 56वां स्थापना दिवस

रायपुर। एरिज एग्रो लि. ने इस वर्ष अपने स्थापना के 56 वर्ष पूरे कर लिए। कंपनी 27 नवम्बर 1969 को स्थापित हुई थी। कंपनी के सीएमडी डॉ. राहुल मिरचंदानी के दिशा-निर्देश में पूरे भारत वर्ष में स्थापना दिवस मनाया गया। समारोहों की औपचारिक शुरुआत कंपनी के सेंट्रल रिजन वाइस प्रेसीडेंट श्री डी.के. तिवारी द्वारा की गई।

स्थापना दिवस के अवसर पर कंपनी द्वारा देशभर में सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ में भी कई महत्वपूर्ण गतिविधियां संपन्न हुई। 'आनंदम' कार्यक्रम के तहत डोंगरगढ़ स्थित मां बम्लेश्वरी मंदिर रतनपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके साथ ही कुसमी फार्म में सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय नागरिकों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कंपनी ने स्थापना दिवस पर किसानों और डीलरों के लिए तकनीकी प्रदर्शन भी आयोजित किया। कुसमी फार्म में एरिज एग्रो के विभिन्न उत्पादों की प्रोडक्ट डिस्प्ले लगाई गई तथा ड्रोन तकनीक का लाइव डेमो किया गया।

चावड़ा बाग नर्सरी में आयोजित सीबी क्रॉप शो 2025 में बॉयर सेमिनीज वेजिटेबल सीड के स्टॉल पर किसानों को सब्जी बीजों की जानकारी देते हुए कंपनी के रीजनल मैनेजर श्री शरद रामेकर एवं बिजनेस मैनेजर श्री पंकज पवाले।

चावड़ा बाग नर्सरी में आयोजित सीबी क्रॉप शो 2025 में नामधारी सीड्स के स्टॉल पर किसानों को नई-नई किस्मों की जानकारी देते हुए कंपनी के अधिकारी श्री संदीप ठाकुर, श्री दुर्गा राठौर, श्री संदीप वर्मा, श्री रामलला पटेल एवं श्री सोनी बिसेन।

देश-विदेश में छत्तीसगढ़ के उत्पादों की बढ़ रही मांग : श्री साय

अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में मुख्यमंत्री ने छ.ग. पेवेलियन का किया अवलोकन

रायपुर। भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में छ.ग. पेवेलियन आकर्षण का केंद्र बना रहा। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ पेवेलियन का भ्रमण कर स्टॉलों का अवलोकन किया। उन्होंने पेवेलियन में प्रदर्शित उत्पादों और नवाचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ वैश्विक व्यापार मंचों पर लगातार अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ की पारंपरिक कला, हस्तशिल्प, वनोपज आधारित उत्पाद और पारंपरिक कला वैश्विक बाजार में अपनी विशेष पहचान बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'देश-विदेश के खरीदारों के बीच छत्तीसगढ़ी उत्पादों की बढ़ती मांग स्थानीय अर्थव्यवस्था की मजबूती और हमारे कारीगरों के सम्मान को नई दिशा दे रही है। यह 'आत्मनिर्भर छत्तीसगढ़' के हमारे संकल्प की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।'

उन्होंने पवेलियन में प्रदर्शित कोसा सिल्क, धातु-शिल्प, ढोकरा कला, प्राकृतिक वन-आधारित उत्पाद, मिलेट-आधारित फूड प्रोडक्ट्स और सूक्ष्म उद्यमों के अभिनव मॉडल की सराहना की।

मुख्यमंत्री ने पेवेलियन में बस्तर की समृद्ध विरासत और कलाकृतियों के प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने डिजिटल टीवी पर प्रसारित डॉक्यूमेंट्री 'बदलता बस्तर (आमचो बस्तर)' का अवलोकन करते हुए कहा कि डॉक्यूमेंट्री में आज का नया बस्तर स्पष्ट दिखाई देता है। इस अवसर पर उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन, लोकसभा सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्रीमती कमलेश जांगड़े एवं अन्य जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी उपस्थित थे।

KRIBHCO
Cooperative and beyond...
International Year of Cooperatives 2025
novonesis
एक नई क्रांति
कृभको राइज़ोसुपर
जड़ों का ज़बरदस्त विकास
पोषण क्षमता में वृद्धि
अधिक उत्पादन, बेहतर लाभ
पोषक तत्वों के अवशोषण की क्षमता में वृद्धि
फसलों में विपरीत जलवायु के प्रति सहनशीलता में वृद्धि
मिट्टी की उर्वरता में सुधार के साथ-साथ उपज में भी वृद्धि
RHIZOSUPER
Mg Ca N Mn S K P
The time for Biosolutions is now
मजबूत हो जड़ें, तो किसान बढ़े
कृषक भारती को आपरेटिव लि., रायपुर (छ.ग.)

अत्याधुनिक तकनीक एवं भारत सरकार के उर्वरक नियंत्रण आदेश की व्याख्या के अनुसार निर्मित
सुहाने एग्रो करे चमत्कार,
बढ़ाये पैदावार भर दे भण्डार
Surya Gold
Haryali
Maha Zinc
Shakti 19:19:19
Nutripower
Surya AMMONIUM SULPHATE
Surya Zyme
Surya CALCIUM NITRATE
निर्माता : सुहाने एग्रो (इं) प्रा.लि.
माधव एग्रो केम (प्रा.लि.)
Suhane Agro
MAC
शॉप नं. 124 लालगंगा मिडास, बिलासपुर रोड, फाफाडीह, रायपुर (छ.ग.), फोन : 0771-4089393, 4009393,
मो. : 7869701929, 9425507703, 9981387777, email : agro.oneindia13@yahoo.co.in

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम
50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)
कृषक जगत
डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
प्रमुख आकर्षण
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
• प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
• कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
• कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
• बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
• पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
इंदौर : सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
इंदौर कार्या. : 9826024864
भोपाल : अजय बोन्द्रिया : 9826255861
नई दिल्ली : जयपुर : निमिष गंगराड़े : 7387422952
रायपुर : प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
ई-मेल : info@krishakjagat.org
हेल्पलाईन : 6262166222
कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद
कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार*
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
* नियम व शर्तें लागू
विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी